प्रयोगवाद का आविर्भाव सन् 1943 में 'तार सप्तक' के प्रकाशन के साथ हुआ। इसमें सात कवियों की रचनायें संग्रहीत हैं, जिनमें प्रमुख अज्ञेय जी हैं। प्रयोगवादी धारा के उल्लेखनीय कवि हैं – अज्ञेय, भवानीप्रसाद मिश्र, गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती, भारतभूषण अग्रवाल और नेमीचन्द जैन।

प्रगतिवाद :- छायावादी काव्यधारा में ह्रासोन्मुखी प्रवृत्तियों के आ जाने पर हिन्दी में एक नवीन काव्यधारा की प्रतिष्ठा हुई जिसे प्रगतिवाद कहा गया। राजनीति के क्षेत्र में जो साम्यवाद है, साहित्य के क्षेत्र में वही प्रगतिवाद है। प्रगतिवाद कार्लमार्क्स के दर्शन का साहित्य में व्यावहारिक पक्ष है। प्रगतिवादी साहित्यिक में – दलित, पीड़ित, शोषित तथा श्रमिक वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई गई है। रामविलास शर्मा, नरेन्द्र, अंचल, पंत, निराला, इत्यादि।

छायावाद : हिन्दी साहित्येतिहास लेखकों ने सन् 1918 से 1936 तक के समय को छायावादी युग कहा है किन्तु 1930 के लगभग कवियों की एक नयी पीढ़ी का उदय हुआ जिसे डा० नरेन्द्र ने छायावाद का उत्तरार्द्ध कहा है। इस पीढ़ी के कवि अधिकतर अहंवादी नियतिवादी तथा अन्तर्मुखी भी हैं बच्चन, अज्ञेय, अंचल, तथा नरेन्द्र।

छायावाद • विषय की दृष्टि से अलौकिक न होने पर भी यह काव्य श्रेष्ठ है। छायावाद इसलिए भी श्रेष्ठ है कि इसमें मानव की महत्ता है। बीस वर्षों की छोटी सी अवधि में इसने खड़ीबोली को सरस, सुकुमार और सौष्ठव सम्पन्न करके काव्योपयुक्त बना दिया। काव्य में व्यक्तिवाद और गीति की प्रतिष्ठा इस धारा की अनुपम देन है।

I. डा० नगेन्द्र
II. डा० केसरी नारायण शुक्ल
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
III
IV. पंडित विश्वनाथ मिश्र
V. डा० शिवकुमार शर्मा (संत)
VI. डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल (संत)
VII. श्री परशुराम चतुर्वेदी (संत)
VIII. राम गुलाब द्विवेदी

नारी की झाँई पड़त अंधा होत भुजंग,
कबिरा तिन की का गति जो नित नारी के संग।

नवलकुमार